ISSN-2349-9575 शोध परिधि ISSN-2349-9575

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

बच्चन की मधुशाला में जीवन चेतना

डॉ. जीत सिंह
सहा. प्रो. हिन्दी
कु. मायावती राज. महिला महाविद्यालय
बादलपुर, (गौ.बु.नगर)

डॉ. मन्जू चौहान
सहा. प्रो. हिन्दी
देवता महाविद्यालय
मोरना (धामपुर)

शोध सारांश

कवि का हृदय केवल हृदय नहीं है। उसकी हृदय गोद में त्रिकाल और त्रिभुवन सोते रहते हैं, सृष्टि दूधमुँही बच्ची के समान क्रीड़ा करती है, और प्रलय नटखट बालक के समान उत्पात मचाता है। उसका हृदयांग, गगन के गान समीकरण के ह्रास और सागर के रोदन से प्रतिध्वनित हुआ करता है। उसके हृदय मन्दिर में, जीवन-मरण अनवरत गति से नृत्य किया करते हैं। इस कारण कवि के हृदय के गलने के साथ ही आज समस्त विश्व मादक हाला से परिप्लावित हो उठा है।

मिट्टी का तन, मस्ती का मन
क्षणभर जीवन, मेरा परिचय

बच्चन का पूरा नाम हरिवंशराय बच्चन है इनका जन्म 1907 अल्मोड़ा गढ़वाल में हुआ। बच्चन का आरम्भिक जीवन कष्टों और अभावों में बीता। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ा। इसका परिणाम हुआ कि कविता जीवन से पूरी तरह विमुख नहीं है। जहाँ 'मधुशाला' में पूरी तरह गर्क दिखायी देते हैं, वहाँ भी इन्हें ये भान रहा है कि मधुशाला धार्मिक साम्प्रदायिक अन्तराल को दूर कर अनुभूति के धरातल पर - चाहे वह अनुभूति कर्महीन मस्ती की ही क्यों न हो - एकता की स्थापना करती है।1

"बच्चन मुख्यतः मानव-भावना, अनुभति, प्राणों की ज्वाला तथा जीवन संघर्ष का आत्मनिष्ठ कवि है। मैंने कभी उसके लिए ठीक ही लिखा था-

अमृत हृदय में, गरल कंठ में, मधु अधरों में,
आस तुम वीणा धर कर में जन-मन-मादन।"
'सुमित्रानन्दन पन्त'

मुझे 'मधुशाला' जीवन की शाला लगती है। उन्होंने साहित्य की एक नई धारा का प्रवर्त्तन किया। इस हालावाद में बच्चन जी ने सिर्फ मदिरा का बखान नहीं किया है बल्कि मधुशाला के माध्यम से जीवन को समझाया है, जीवन के मूल सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। जीवन के पल-पल को मधुशाला में ढाल कर जीवन को खुशहाल बनाने का सफल